VII

डा. सुजाता गुप्ता
स्नातक डिग्री-३ पत्र-७ हिंदी

संचार माध्यमों का स्वरूप :

संचार एक गतिशील प्रक्रिया है जो संबंधों पर आधारित है। वह संबंध और व्यक्तियों को जोड़ने का एक बड़ा हथियार है — एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक व्यक्ति को एक समूह से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक देश से दूसरे देश से जोड़ने का काम भी संचार के आधार पर ही होता है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी संचार की परिभाषाएँ :-

विल्बर श्राम :

संचार लैटिन भाषा के कम्यूनिस शब्द से ग्रहण किया गया है। जब हम संप्रेषित करते हैं, तब हम अपनी सूचना विचार और अभिवृत्ति की भागीदारी का प्रयास करते हैं।

जे. पॉल. मीगनस :

यह एक प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्ति ऐसे सभी विचारों, तथ्यों, अनुभवों अथवा प्रभावों का विनिमय करते हैं जिससे प्रत्येक व्यक्ति संदेश का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है। वास्तव में यह संप्रेषक और प्रापक के बीच किसी संदेश अथवा संदेशों की श्रृंखला प्राप्त करने के लिए की गई सम्मिलित प्रक्रिया है।

सुमिक बेंगल :

संचार एक प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक व्यवस्था के द्वारा सूचना, निर्णय और निर्देश दिए जाते हैं और यह एक ऐसा मार्ग है जिसमें ज्ञान, विचार और दृष्टिकोणों को निर्मित अथवा परिवर्तित किया जाता है।

उक्त परिभाषा के आधार पर यह कहा जा सकता है —

(क) अर्थ का संचार होता है।
(ख) सामाजिक मान्यताओं का संचरण होता है।
(ग) अनुभव बाँटना है।

संचार के कार्य एवं महत्त्व

संचार जीवन को परिपूर्ण बनाता है और जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है। जब हम अकेले सोचते हैं या जब हम अपने विचार दूसरों

दूसरों के सामने रखते हैं या परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं तो निश्चित ही संचार होता है। सपने देखना भी संचार का रूप है। संचार के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं:

(i) सूचना / जानकारी :

समाचारों का प्रसारण और प्रकाशन किसी भी परिस्थिति में अन्य पक्षों तक सूचना अथवा जानकारी का काम करते हैं। चित्रों, तथ्यों, संदेशों, विचारों और समीक्षा आदि की और व्यक्तिगत, पर्यावरण, देश - विदेश की परिस्थितियों की समझ अथवा प्रतिक्रिया हेतु उपयोगी है।

(ii) समाजीकरण :

सार्वजनिक जीवन में सक्रियता के अवसर प्राप्त होते हैं। सामाजिक ज्ञान का भंडार उपलब्ध कराना ही संचार के कार्य हैं। समाज में प्रभावी रूप से अपनी जगह स्थापित करना और सामाजिक संबद्धता को विकसित करना भी एक मुख्य कार्य की श्रेणी में है।

(iii) शिक्षा :

संचार का एक अन्य प्रमुख कार्य शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर लोगों को शिक्षित करना है। शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया है और विज्ञान ने संचार माध्यमों को। और अब संचार माध्यम शिक्षा और विज्ञान - दोनों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहे हैं। शिक्षा का मतलब केवल लोगों को पढ़ाने-लिखाने से ही नहीं है। बल्कि देश और समाज में उपलब्ध संसाधनों की जानकारी देकर उपयोग करने योग्य भी बनाना है। शिक्षा से मानव का बौद्धिक विकास एवं चरित्र-निर्माण होता है। मनुष्यों का उद्भव अनौपचारिक संचार से होता है, जिसमें औपचारिक शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञों के अनुसार, संचार माध्यमों द्वारा शिक्षा का जितना अधिक प्रचार प्रसार होगा, देश व समाज उतना ही अधिक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और नैतिक विकास की ओर